तांग्सा जनजाति के मुहावरों में प्रयुक्त गालियों का विश्लेषणात्मक अध्ययन

रेमोन लोंग्कु

तांग्सा जनजाति अरुणाचल प्रदेश के छब्बीस जनजातियों में से एक प्रमुख जनजाति है। यह जनजाति अपनी एक मौलिक पहचान रखती हैं। तांग्सा के अंतर्गत तीस से अधिक उपजनजातियाँ हैं, जैसे लोंग्चांग, मुक्लोम, तिखाक, हावी, पोंथाई, मोसांग, मोरांग, किम्सिंग, रोंरंग, जुगली, लुन्गरी, सांके, लुन्फी, शांग्वल, शांग्री, डाइमोंग, मुंगरे, लांचिंग, हाखुन, हाचेंग, चुलिम, जोंगी आदि। 'तांग' का अर्थ होता है 'पहाड़' तथा 'सा' का अर्थ है 'निवासी या लोग' अर्थात पहाड़ के निवासी या लोग। आदिम युगों से तांग्सा जनजाति की अपनी स्वतंत्र संस्कृति, इतिहास व समाज रहा है। तांग्सा समाज के लोग प्रकृति में आस्था रखते हैं तथा प्रकृति को पुरखा मानते हुए पूजते आ रहे हैं। उनका आर्थिक लोक जीवन कृषि पर निर्भर रहता है। कृषि द्वारा ही उनका घर चलता है। कृषि जीवन में फसल बोने से लेकर कटाई तक में प्रकृति का एक विशेष योगदान रहता है। हो सकता है कि, यही कारण है जो तांग्सा लोग 'तांग' अर्थात 'पहाड़' के निवासी कहलाते हैं। उदाहरण के लिए 'तांग' शब्द से आशय पहाड़ होता है और 'सा' से लोग या वासी। पहाड़ अथवा तांग में तांग्सा लोग आदिम युगों से रहते आ रहे हैं। वे खेती पहाड़ों में करते हैं, पहाड़ों से उन्हें आहार प्राप्त हुआ, रहने के लिए स्थान मिला, समुदाय बने, ऐसे में स्वाभाविक है कि, पहाड़ के निकट रहने के कारण उनकी मातृभाषा में उन्हें तांग्सा कहा गया। तांग्सा शब्द के विषय में विद्वानों में कुछ मतभेद भी हैं। इस संदर्भ में इंदिरा बरुआ और दीपंजना दी. दास कहते हैं - "The Scholars refer or analyse the word 'Tangsa' is the amalgams of two local words, i.e. Tang (hills) and Sa (people). Thus, the literal meaning of the word 'Tangsa' is hill people. It has also been mentioned that the word 'Tang' means up-stair posterity and 'Sa' means son of Tang or children of Tang, called Tangsa. Similarly, the word Tang refers three conjugative meanings: (i) Tang means up-stairs, (ii) Tang means conqueror, and (iii) Tang means hill people. Thus, the word carriers a significant Interpretation."[1] अर्थात विद्वान 'तांग्सा' शब्द का विभिन्न कोणों से उल्लेख या विश्लेषण करते हैं। आम व्याख्या यह है कि 'तांग्सा' शब्द दो स्थानीय शब्दों का मिश्रण है, यानी तांग (पहाड़ियाँ) और सा (लोग)। इस प्रकार तांग्सा का शाब्दिक अर्थ है पहाड़ी लोग। कुछ विद्वानों का यह भी मानना है कि 'तांग' शब्द का अर्थ है ऊपर की ओर जाने वाली सीढ़ी और 'सा' का अर्थ है 'तांग' का बेटा या 'तांग' के बच्चे, जिसे तांग्सा कहा जाता है। इसी प्रकार 'तांग' शब्द तीन संयुग्मी अर्थों को संदर्भित करता है: (i) तांग का अर्थ है ऊपर की सीढ़ी, (ii) तांग का अर्थ है विजेता, (iii) तांग का अर्थ है पहाड़ी लोग। इस प्रकार यह शब्द एक महत्त्वपूर्ण व्याख्या रखता है।

तांग्सा लोक साहित्य का संक्षिप्त परिचय

लोक साहित्य समाज का ज्ञान है। इस लोक साहित्य में मानव समाज के इतिहास, समुदाय, संस्कृति, दर्शन आदि मौजूद रहते हैं। इसके रचनाकार अज्ञात होते हैं। साथ ही यह लोक साहित्य किसी एक व्यक्ति के द्वारा नहीं, अनेक लोक के द्वारा रचा जाता है। लोक साहित्य को अंग्रेजी में 'फोक लिटरेचर' या 'फोकलोर' भी

कहते हैं। यह कृत्रिम नहीं, अकृत्रिम होता है जो पीढ़ी दर पीढ़ी समाज में विराजमान रहता है। लोक साहित्य के विद्वान कृष्णदेव उपाध्याय के शब्दों में -"किसी देश का लोक साहित्य उस देश की जनता के हृदय का उदगार है। वह उनकी हार्दिक भावनाओं का सच्चा प्रतीक है। यदि किसी देश की सभ्यता का अध्ययन करना हो तो सर्वप्रथम उसके लोक साहित्य का अध्ययन आवश्यक होगा। लोक साहित्य जन-समाज की वस्तु है अत: उसमें जनता का हृदय लिप्त रहता है। यह साहित्य कृत्रिमता से कोशों दूर रहता है।"[2] अर्थात लोक साहित्य मौखिक परंपरा के रूप में एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को प्रदान करते रहने की प्रक्रिया है। लोक साहित्य में अलौकिक चीज़ों का समावेश भी ज़रूर रहता है, किंतु इसमें लौकिक और यथार्थ से संबंधित चेतना का भी अस्तित्व मौजूद है। इसमें भाषा, मानव, प्रकृति, पशु-पक्षी, समाज, अस्तित्व और अस्मिता के रूप में दिखाई देती हैं। इसी प्रकार तांग्सा समाज में भी लोक साहित्य आदिम युगों से मौखिक संस्कृति के रूप में प्रचलित है। तांग्सा लोक साहित्य या तांग्सा मौखिक साहित्य में पाँच प्रकार के स्वरूप शामिल हैं जैसे लोककथा, लोकगीत, लोकगाथा, लोकनृत्य और लोक सुभाषित। इस लोक साहित्य में लोकनाट्य नहीं है, क्योंकि यह उनकी संस्कृति में नहीं है। उनका लोक साहित्य मौखिक परंपरा की दृष्टि से बहुत ही प्राचीन है। इसकी उत्पत्ति कब, क्यों और कैसे हुई ? इस पर चर्चा करना बहुत ही जटिल है।

डॉ. शरतेंदु के शब्दों में- "लोक साहित्य किसी एक की रचना नहीं। वरन् संपूर्ण लोक ने इसे मिलकर रचा है। युग के अनुसार लोक इनके गीतों में परिवर्तन और परिवर्धन करता रहता है। अत: लोक साहित्य में लोक का प्राण होता है ।"[3] इस प्रकार, किसी भी समाज या समुदाय को जानने और समझने के लिए लोक साहित्य का अध्ययन महत्त्वपूर्ण है। तांग्सा लोक साहित्य में राजा-प्रजा, राजा-रानी, हीरे या धन के प्रति आकर्षक, सांप्रदायिकता, जाति या वर्ग व्यवस्था, ईश्वर या धर्म, माँ-बहन की अश्लील गालियाँ, बलात्कार जैसी विषय-वस्तु मौजूद नहीं है।

तांग्सा जनजाति के मुहावरों में गालियाँ

प्रत्येक समाज में भिन्न-भिन्न रूपों में मुहावरों का प्रयोग किया जाता है। यह मुहावरे, कुछ गालियों के रूप में अथवा कुछ प्रशंसा के रूप प्रयोग होता हुआ दिखाई देता है। तांग्सा मुहावरों में माँ-बहन की अश्लील गालियाँ नहीं हैं, और न ही संभोग से संबंधित कोई गालियाँ हैं किंतु इनके मुहावरों में अंगों से संबंधित, प्रकृति से संबंधित, पशु-पक्षियों से संबंधित तथा भूत-प्रेतों से संबंधित गालियाँ प्रचुर मात्राओं में मौजूद हैं। गाली भी मनुष्य द्वारा बनाई गयी भाषा का एक अंग है। यह गाली क्यों, कैसे और किसलिए बनाई गयी है? इसका अध्ययन करना भी शोध का एक मौलिक एवं नवीन दायित्व है। गाहे-बगाहे मनुष्य हंसी-मज़ाक, क्रोध, तनाव और घुटन में सामान्य रूप से गाली का प्रयोग करते हैं। यह गालियां कुछ मनुष्य के लिए हैं तो कुछ पशु-पक्षियों के लिए भी, कुछ भूत-प्रेतों से संबंधित तो कुछ प्रकृति के लिए भी। जब मनुष्य एक मनुष्य को गाली देता है तो यह गाली विभिन्न शैलियों में एक प्रतीक के रूप में अभिव्यक्त होते हैं। इस अभिव्यक्ति को सपाट एवं व्यंग्य दोनों शैलियों में देखा-परखा जा सकता है। गालियों का अध्ययन करने के लिए इसके प्रयोग से संबंधी सामाजिक आधारों का विश्लेषण आवश्यक है, क्योंकि इसके द्वारा हम गालियों के पीछे के छुपे तथ्य या हेतु को विस्तार से जान एवं

समझ सकते हैं। तांग्सा जनजाति के मुहावरों में गालियों का विश्लेषणात्मक अध्ययन करने के लिए इन बिंदुओं के माध्यम से समझा जा सकता है-

अंगों से संबंधित गालियाँ

मनुष्य का अंग प्राकृतिक है। शरीर का प्रत्येक अंग मनुष्य के लिए महत्त्वपूर्ण है। हर व्यक्ति अपने व्यक्तिगत अंगों को लेकर गंभीर एवं सजग रहते हैं। जब किसी व्यक्ति द्वारा दूसरे व्यक्ति पर उसके अंगों को लेकर गाली दी जाती है तो उस व्यक्ति पर एक गहरा प्रभाव पड़ता है। हो सकता है, इससे उस व्यक्ति को अत्यधिक क्रोध आये अथवा बदले में वो हाथापाई पर भी उतर आये। गाली एक प्रकार से हथियार ही है जो किसी व्यक्ति को नीचा दिखाने के लिए प्रयोग की जाती है। तांग्सा मुहावरों में अंगों से संबंधित एक प्रसिद्ध गाली है जो पुरुषों में अधिक प्रचलित है -"बा वोपुक, बा चंगती था बात उ" अर्थात 'पुरुष के लिंग/शिश्न संबंधी बात, यह मुहावरा अधिकतर पुरुषों में प्रचलित है। जब एक पुरुष दूसरे पुरुष की किसी बात से असहमत होता है तो इस मुहावरे का प्रयोग किया जाता है। दरअसल, यह मुहावरा मंदबुद्धि का प्रतीक है कि उसका ज्ञान मस्तिष्क पर नहीं, उसके लिंग पर है, इसलिए वो व्यक्ति तर्कहीन बातें कर रहा है। इसी प्रकार एक और गाली प्रचलित है -"बा वोअ् जे बियाग फनांग" अर्थात 'तुम्हारे लिंग की ऊपरी चमरी निकाल दूँगा', यह मुहावरा तब प्रयोग किया जाता है, जब कोई व्यक्ति बच्चों जैसी बातें या नाबालिक जैसा व्यवहार करता है। इस मुहावरे का प्रतीक ऐसे नाबालिक या बच्चों से संबंधित है, जिसकी मानसिकता और वार्तालाप की शैली परिपक्व नहीं है अथवा नाबालिक है। हालांकि, यह मुहावरा केवल पुरुषों में ही प्रचलित है, हो सकता है कि स्त्रियों द्वारा प्रयोग गाली इसके विपरीत हो।

प्रकृति से संबंधित गालियाँ

तांग्सा समाज में प्रकृति के प्रति आस्था एवं सम्मान अवश्य है, किंतु वे यह भी जानते हैं कि प्रकृति एक सीमित वस्तु भी है। वे मनुष्य को प्रकृति की भांति अजीव होने का प्रतीक भी देते हैं तथा प्रकृति द्वारा नुकसान होने पर प्रकृति को गाली भी देते हैं। उदाहरण के लिए अधिक वर्षा होने पर वर्षा के लिए गाली के रूप में एक प्रसिद्ध मुहावरा है -"इरा सुक्करांग रंग रअ् थो" अर्थात 'शव को आग में जलाने वाली वर्षा, यह मुहावरा तब प्रयोग किया जाता है, जब अत्यधिक वर्षा होने के कारण किसान खेत में नहीं जा पाते या काम पर जाने के लिए घर से बाहर नहीं निकल पाते। ऐसी स्थति में मनुष्य समय व्यर्थ तथा नुकसान को ध्यान में रखते हुए क्रोध में इस मुहावरे का प्रयोग करने लगता है, जैसे तांग्सा समाज में मनुष्य की मृत्यु के दिन अथवा शव जलाने के दिन, गाँव का कोई भी मनुष्य खेत नहीं जाता और कोई भी भारी-भरकम काम नहीं करते हैं। इसी प्रतीक के रूप में इस मुहावरे का भाव प्रस्तुत हुआ है। इसी प्रकार प्रकृति से संबंधित एक और मुहावरा गाली के रूप में प्रचलित है - "रंग इ रोपता, रंग इ साअ् फुतु ?" अर्थात 'क्या आसमान ने तुम्हें पागल कर दिया है, क्या तुम पर बिजली गिर गयी है ?', यह मुहावरा आमतौर पर एक ऐसे मनुष्य के लिए प्रयोग किया जाता है, जब कोई मनुष्य तर्कहीन बातें तथा किसी पागलों की भांति व्यवहार करता है। ऐसे में उसके इस व्यवहार से तंग आकर क्रोध में, इस मुहावरे को गाली के रूप प्रयोग करते हैं, ताकि इस गाली से उसके अव्यवहार में परिवर्तन आये तथा उसकी सूझ-बूझ अकल ठिकाने आये।

पशु-पक्षियाँ एवं अन्य जीवों से संबंधित गालियाँ

तांग्सा मुहावरों में पशु-पक्षियों से संबंधित गालियाँ भी प्रचुर मात्रा में मौजूद है। इन गालियों में रेंगने वाले जीव, पालतू जानवर, जंगली जानवर तथा उड़ने वाले जीवों से लेकर, जल में तैरने वाले जीवों तक प्रचलित है। एक मुहावरा है-" हीइ हुन्न हुन्न इजी नक्क्चक फन्न वन्न" अर्थात 'कुत्ते की तरह मेरा पीछा मत करो', इस प्रकार की गाली का प्रयोग तब होता है, जब कोई व्यक्ति किसी व्यक्ति के मना करने पर भी उसका पीछा करता रहता है और जब वो व्यक्ति उसके इस व्यवहार से परेशान हो जाता है, तब इस मुहावरे को गाली के रूप में उस पर प्रहार करते हैं। घर का पालतू कुत्ता अक्सर अपने मालिक का पीछा करता है। मालिक जहाँ जाता है वो भी उसके पीछे-पीछे जाता है। तांग्सा समाज में कुत्ता पालने की परंपरा अति प्राचीन है। प्रत्येक घर में एक या दो से अधिक पालतू कुत्ते का रहना वहाँ सामान्य बात है। कुत्ता वफादार होता है, जो अपने मालिक को शत्रुओं से बचाने के लिए सचेत भी करता है। यही कारण है कि, वो मालिक के इर्द-गिर्द घूमता रहता है या पीछा करता रहता है। अत: मनुष्य का भी, जो मना करने पर भी पीछा करता रहता है, उसे कुत्ते का प्रतीक दे दिया जाता है। एक और गाली से संबंधित मुहावरा है- "एरि जूंगबान री ले" अर्थात 'तुम चिम्पांजी कहीं के', यह एक जंगली जानवर से संबंधित गाली है, जो मुहावरे के रूप में प्रचलित है। इसमें व्यक्ति को चिम्पांजी का प्रतीक दिया जाता है, जब वो व्यक्ति सामान्य मनुष्य के विपरीत जंगली जानवर की भांति व्यवहार करने लगता है। कहने का अभिप्राय है, जानवरों की भांति पेड़ों पर चढ़ना तथा पेड़ की डालियों से लटकना आदि ऐसा व्यवहार, जो मनुष्य कम, जानवर अधिक करते हैं। चिम्पांजी द्वारा पेड़ों पर चढ़ना या डालियों में झूलना, यह उसका प्राकृतिक स्वभाव है, इसमें उसके लिए कोई खतरा या डर नहीं रहता। किंतु जब वही व्यवहार एक व्यक्ति या मनुष्य करता है, तो उसकी जान को खतरा भी रहता है। उसका यही व्यवहार या निडरता कुछ लोगों को बहादुरी के विपरीत मंदबुद्धि या जानवरों जैसा व्यवहार लगने लगता है, और उसे सचेत करने के लिए इस मुहावरे का प्रयोग करता है।

भूत-प्रेतों से संबंधित गालियाँ

तांग्सा जनजाति में भूत-प्रेतों से संबंधित गालियाँ भी विद्यमान हैं। हालांकि, इस प्रकार की गाली या मुहावरे किसी व्यक्ति को कम प्रभावित करती हैं। तात्पर्य यह है कि, अन्य गालियों के मुकाबले ऐसी गालियाँ अधिक सपाट नहीं होती, क्योंकि इस प्रकार की गालियाँ अधिकतर हँसी-मज़ाक में प्रयोग होती हैं। यही कारण है कि, जब कोई व्यक्ति गंभीर स्थिति में भी भूत-प्रेतों का प्रतीक दे कर गालियाँ देते हैं, तो भी किसी पर इसका अधिक प्रभाव नहीं होता। उदाहरण के लिए एक मुहावरा प्रस्तुत है -"इरा सोंगफिन रअ् ले !" अर्थात 'तुम बौना भूत कहीं के', यह गाली ऐसे व्यक्ति को दी जाती है, जिस व्यक्ति की ऊँचाई कम हो अर्थात जो नाटे कद का हो। इसके अतिरिक्त उस व्यक्ति का व्यवहार बहुत ही चुलबुल या बदमाश किस्म का हो। दरअसल बौने भूत तांग्सा समाज के लोक विश्वास से संबंधित हैं, इसका जिक्र लोक कथाओं में भी खूब प्रचलित है। इसके विषय में विस्तार से जानने के लिए एक लोककथा 'मीइ नि आ सोंगफिन' अर्थात 'आदमी और बौना भूत', की व्याख्या करना महत्त्वपूर्ण है। कहा जाता है कि युगों पहले एक आदमी और एक बौने भूत की बहुत अच्छी दोस्ती थी। एक दिन दोनों दोस्त जंगल काट रहे थे। बौने ने उस आदमी को एक चुनौती दी, कि वह बोंग्तोंग्कान

(गोंग वाद्ययंत्र बजाने के लिए प्रयुक्त पौधे की तना) को खाकर दिखाये। आदमी ने उस चुनौती को स्वीकार कर लिया, और वो उस तना को चबाकर खा गया। फिर आदमी ने भी उस बौने को एक चुनौती दी, कि वो अदरक खाकर दिखाये। बौना तुरंत चुनौती के लिए हामी भर लेता है। जब आदमी ने उस बौने को अदरक दिया, तो वो बौना उस अदरक को देखकर खूब हँसने लगता है, और कहना लगा 'तुम मुझे इतनी छोटी सी चीज़ खाने के लिए दे रहे हो, ये तो मेरे लिए कुछ भी नहीं है...' फिर वो जैसे ही अदरक को अपने मुँह में लेकर चबाने लगता है तो वो बौना अदरक के तीखापन को सह नहीं सका, और वह वहाँ से चीखे-चिल्लाये भाग जाता है। कहा जाता है कि, तब से लेकर आज तक आदमी और बौने भूत की दुश्मनी जारी है। यह कथा पूरी तरह से मिथक है, किंतु इसी मिथक से बौने भूत की चर्चा गाली के रूप में मुहावरों में खूब प्रचलित है, और वही प्रतीक बनकर उसके व्यवहार को मनुष्य के साथ भी तुलना के रूप प्रयोग किया जाता है। इस प्रकार तांग्सा मुहावरों में अनेक गालियाँ प्राप्त होती हैं, जो भूत-प्रेतों से भी संबंधित हैं।

तांग्सा मुहावरों में उपलब्ध गालियाँ अन्य जातियों से थोड़ी भिन्न हैं, क्योंकि गालियाँ इनके लिए परंपरा नहीं हैं, अपितु बोलचाल या भाषा का ही एक अंग है। इनके समाज में गालियों के लिए कोई रस्म-रिवाज़ नहीं होते, और न ही किसी उत्सव या महोत्सव पर गालियाँ प्रचलित है। मुहावरे के रूप में गाली की उपस्थिति किसी परिस्थिति पर निर्भर करती है या यह कहा जा सकता है कि, सामूहिक न होकर व्यक्तिगत घटना पर निर्भर होती है। इनके गालियों की सबसे बड़ी विशेषताएँ यह है कि, पुरुष हो या स्त्री दोनों इसका प्रयोग कर सकते हैं, ऐसा नहीं है कि गालियाँ देना केवल पुरुषों के लिए अर्जित है, और स्त्रियों के लिए वर्जित। तांग्सा मुहावरों की गालियों की एक और प्रवृत्ति यह भी है कि, इनकी गालियाँ सीमित होती हैं जैसे स्त्री के लिए दी जाने वाली गाली, पुरुष के लिए दी जाने वाली गाली, बच्चों के लिए दी जाने वाली गालियों के शब्द पृथक होते हैं। मनुष्य या किसी वस्तु के लिंग, रूप, आयु को ध्यान में रखते हुए गालियों के शब्द का प्रयोग भी निर्णय होता है कि, किस शब्द को किसके लिए प्रतीक दिया जाये।

सहायक ग्रंथ सूची

1. Barua, Indira, D.Das, Deepanjana. (2021). *The Tangsa's of Arunachal Pradesh*. New Delhi: Concept Publishing Company Pvt. Ltd. Pg-17
2. उपाध्याय, कृष्णदेव. (2008). *भोजपुरी लोक साहित्य*. वाराणसी: विश्वविद्यालय प्रकाशन. पृ.-9
3. शरतेंदु, सत्यनारायण दुबे. (2001). *भोजपुरी लोक साहित्य*. प्रयागराज: आधुनिक प्रकाशन गृह, पृ. -19
4. Dhaar, Bibhash, Coomar, Palash Chandra. (2016). *Tribes of Arunachal Pradesh.* New Delhi: Abhijit publications.
5. Dutta, Parul. (2010). *The Tangsa's'*. Itanagar: G.M.Printers and Publishers.
6. GRIERSON, G.A. (1919). *'LINGUISTIC SURVEY OF INDIA - VOLUMN III*. West Bengal: Calcutta Superintendent Government Printing India.

*(**लेखकीय परिचय :** रेमोन लोंग्कु उत्तर-पूर्व पर्वत्तीय विश्वविद्यालय, शिलॉंग, मेघालय के हिंदी विभाग में शोधार्थी हैं। मोबा:7086433304, ई-मेल : remonlongku1@gmail.com)*